पिया तोसे नैना लागे रे..., बोले रे पपीहरा...

डॉ. विजय सुखवानी
लेखक, मोटिवेशनल स्पीकर
vsukhwani@gmail.com

भारतीय सिनेमा में गीत संगीत का महत्वपूर्ण स्थान है. गीत संगीत के बिना एक सफल हिंदी फ़िल्म की कल्पना मुश्किल है. हिंदी फिल्मों में गीतों के लिये जहाँ एक ओर लोकधुनों और पश्चिमी संगीत का भरपूर इस्तेमाल हुआ, वहीं दूसरी ओर हिंदी फिल्मों में शास्त्रीय संगीत पर आधारित गानों का भी एक समृद्ध इतिहास रहा है और इन गानों ने निश्चित ही हिंदी फिल्मों के संगीत को अनूठी गरिमा और शाश्वत सौन्दर्य प्रदान किया है. भारतीय सिनेमा के शुरुआत से लेकर आज तक, शास्त्रीय संगीत के रागों की विशिष्ट संरचना, लय और भावों ने अनगिनत फिल्मी गीतों को न केवल कर्णप्रिय बनाया है, साथ ही उन्हें एक अलग पहचान भी दी है.

फिल्मों में शास्त्रीय संगीत पर आधारित गीत मनोरंजन के साथ साथ न केवल भारतीय संगीत की सांस्कृतिक विरासत को जीवित रखते हैं साथ ही नई पीढ़ी को भारतीय रागों की सुंदरता से भी परिचित कराते हैं.

भारतीय शास्त्रीय संगीत अपनी स्वर, राग और ताल की अनूठी परंपरा के कारण सदियों से भारतीय संस्कृति की आत्मा रहा है. फिल्म संगीतकारों ने इस परंपरा को अपनाकर निश्चित ही शास्त्रीय संगीत को आम जनता को सुलभ कराया है.

राग, भारतीय शास्त्रीय संगीत की मूल आत्मा हैं, जो स्वरों के एक निश्चित क्रम और नियमों पर आधारित होते हैं. जब संगीतकार इन रागों को फिल्मी गीतों में पिरोते हैं, तो वे गीत को एक खास मूड, समय और भाव प्रदान करते हैं, कुछ राग जैसे राग दरबारी कान्हड़ा या राग यमन, गंभीर, शांत और चिंतनशील भावनाओं को व्यक्त करने में मदद करते हैं, राग भैरवी या राग पहाड़ी जैसे राग अक्सर प्रेम, भक्ति या चंचलता के भावों को उभारते हैं. इसी प्रकार शास्त्रीय संगीत में हर राग का एक निश्चित समय होता है. उदाहरण के लिए, राग भैरव का प्रयोग सुबह के गीतों में, जबकि राग मालकौंस का प्रयोग देर रात के गीतों में किया जाता है, जिससे गीतों में समय के अनुरूप प्राकृतिक भाव आ जाते हैं.

भारतीय फिल्म संगीत की आत्मा में शास्त्रीय संगीत की जड़ें गहरी हैं. चाहे वह नौशाद, गुलाम मोहम्मद और एस डी बर्मन की मधुर रचनाएँ हों या रहमान, शंकर-एहसान-लॉय , इस्माइल दरबार आदि की आधुनिक प्रयोगात्मक धुनें, भारतीय शास्त्रीय संगीत का प्रभाव हर युग में महसूस किया जा सकता है. इनके अलावा खैय्याम, रवींद्र जैन, जयदेव,शिव हरि (शिव शर्मा एवं हरिप्रसाद चौरसिया) और भूपेन हजारिका आदि संगीतकारों ने भी शास्त्रीय संगीत को आधुनिकता के साथ जोड़ा है .

शास्त्रीय संगीत पर आधारित इन लोकप्रिय गीतों ने यह सिद्ध किया कि शास्त्रीय संगीत केवल विद्वानों के लिए नहीं, बल्कि जन-जन के हृदय में उतरने वाला अदभुत संगीत है. नौशाद ने 'बैजू बावरा' और 'मुग़ल-ए-आज़म' जैसी फिल्मों के माध्यम से शास्त्रीय संगीत को अत्यंत लोकप्रिय बनाया. फ़िल्म बैजू बावरा के गीत 'मन तड़पत हरि दर्शन को आज' (राग मालकौंस) और 'ओ दुनिया के रखवाले' (राग दरबारी कानड़ा)आदि शास्त्रीय संगीत के रागों पर आधारित हैं. इसी प्रकार प्रसिद्ध संगीतकार मदन मोहन के गीतों व गज़लो में ठुमरी, दादरा और राग आधारित संगीत सुरों का प्रयोग हुआ है. 'लग जा गले' (वो कौन थी), 'नैनों में बदरा छाए' (मेरा साया) कुछ मिसाल हैं .

फ़िल्म बूट पॉलिश का प्रसिद्ध गीत 'लपक झपक तू आ रे बदरवा' और फ़िल्म बसंत बहार का 'सुर ना सजे क्या गाउँ मैं' राग बसंत बहार पर आधारित हैं. फिल्म आनंद मठ का गीत 'वंदे मातरम' राग देश में रचा गया है, जो देशभक्ति की भावना को गहराई प्रदान करता है. इसी राग पर ही प्रसिद्ध गीत 'दुख के दिन बीतत नाहीं' (देवदास) भी आधारित है, आखिरी ख़त का 'बहारों मेरा जीवन भी संवारों ' और फ़िल्म शगुन का गीत 'तुम अपना रंजो गम अपनी परेशानी', राग पहाड़ी पर आधारित हैं .

रागों पर आधारित कुछ और मशहूर गीत इस प्रकार हैं.... कल्याणजी आनंदजी द्वारा संगीतबद्ध फिल्म सरस्वतीचंद्र का गीत 'चँदन सा बदन' राग यमन में है, फिल्म स्ट्रीट सिंगर का के. एल. सहगल का गाया प्रसिद्ध गीत 'बाबुल मोरा नैहर छूटो ही जाए' राग भैरवी में है, जिसमें विरह और करुणा का भाव गहराई से झलकता है,? बैजू बावरा का गीत 'तू गंगा की मौज' राग भैरवी के माधुर्य और विस्तार को दिखाता है .

फ़िल्म गाइड का लता जी द्वारा गाया व एस डी बर्मन का संगीततबद्ध गीत 'पिया तोसे नैना लागे रे' राग दरबार और मिश्र मल्हार पर आधारित है, फ़िल्म तानसेन का 'दिया जलाओ जग मग जग मग' राग दीपक पर आधारित हैँ. इसी प्रकार फ़िल्म गुड्डी का 'बोले रे पपीहरा' और फ़िल्म आम्रपाली का 'जाओ रे जोगी तुम जाओ 'राग मल्हार पर आधारित हैं .

ये सही है कि आधुनिक फिल्मों में पश्चिमी संगीत का ज्यादा प्रभाव देखा जा सकता है, परंतु रहमान, शंकर-एहसान-लॉय , इस्माइल दरबार, सलीम सुलेमान जैसे संगीतकारों ने शास्त्रीय संगीत को भी अपनी रचनाओं में विशेष स्थान दिया है. उदाहरण के लिये गीत 'ओ रे पिया' (आजा नच ले) में संगीत में शास्त्रीय पुट स्पष्ट दिखाई देता है. इसी प्रकार 'अलबेला सजन आयो री' (हम दिल दे चुके सनम) गीत शुद्ध दरबारी राग पर आधारित है और शास्त्रीय आलापों से सजा हुआ है इसी प्रकार रहमान द्वारा संगीतबद्ध फ़िल्म लगान का गीत 'घनन घनन घिर घिर आए' राग मियाँ की मल्हार पर आधारित है .

उम्मीद है शास्त्रीय रागों पर आधारित ये गीत और उनका माधुर्य आपको पसंद आये होंगे,इसी प्रकार के कई और भी गीत हैं जिनकी चर्चा फिर कभी. आज के लिये इतना ही,अगले सप्ताह फिर भेंट होगी तब तक के लिये नमस्कार.

कुब्रा सैत 'लव लिंगो' सीजन 2 में बनीं पहली मेहमान

अपने बेबाक विचारों और निडर आवाज़ के लिए जानी जाने वाली अभिनेत्री कुब्रा सैत हाल ही में 'लव लिंगो' सीज़न 2 के पहले एपिसोड में मुख्य अतिथि बनीं नज़र आईं, जहाँ उन्होंने महिलाओं की पहचान, आत्म-स्वीकार और समाज के तयशुदा लेबल्स से परे जीने के मायनों पर खुलकर बात की.जस सगू और अर्सला कुरैशी द्वारा होस्ट किया गया यह नया सीज़न प्रेम, भाषा और संस्कृति के गहरे रिश्ते को आगे बढ़ाता है, और अब कुब्रा की ईमानदार बातचीत ने शो के टोन को एक मजबूत दिशा दी है.

कुब्रा सैत ने कहा, 'अच्छी लड़कियाँ लड़कों से बात नहीं करतीं, अच्छी लड़कियाँ लिपस्टिक नहीं लगातीं, अच्छी लड़कियाँ बस सुनती हैं, बचपन में मैंने कहीं यह पंक्तियां पढ़ी थी. लेकिन अब मेरी ज़िंदगी में इनमें से कुछ भी नहीं है. मैं किसी तय कैलेंडर या नियमों के हिसाब से नहीं जीती और न जी सकती हूँ. कब शादी करनी है या कब खुश रहना है, ये मैं तय करूँगी. मैंने 30 साल की उम्र में तैरना सीखा, खुले समुद्र में गोता लगाया और मेरे लिए यही असली आज़ादी का एहसास है. 'पिछले सीज़न में दीपिका पादुकोण के प्रभावशाली विचारों की तरह, कुब्रा भी इस बार जेंडर आधारित उम्मीदों पर बातचीत को आगे बढ़ाती नज़र आई हैं और महिलाओं को अपने जीवन के

58 वर्ष की हुई जूही चावला

बॉलीवुड की जानीमानी अभिनेत्री जूही चावला आज 58 वर्ष की हो गयीं. जूही चावला का जन्म 13 नवंबर, 1967 को हुआ था. उनके पिता एस.चावला एक डॉक्टर थे. जूही चावला ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा लुधियाना से पूरी की. इसके बाद उन्होंने आगे की पढ़ाई मुंबई के सिद्धेनम कॉलेज से पूरी की. वर्ष 1984 में वह मिस इंडिया चुनी गई. इसके बाद उन्हें मिस यूनीवर्स प्रतियोगिता में हिस्सा लेने का मौका मिला. इस प्रतियोगिता में उन्हें सर्वश्रेष्ठ वेश-भूषा के पुरस्कार से सम्मानित किया गया.इस बीच उन्हें कई विज्ञापन फिल्मों में मॉडलिंग का काम करने का अवसर मिला.

जूही चावला ने अपने सिने करियर की शुरुआत वर्ष 1986 में प्रदर्शित फिल्म 'सल्तनत' से की. मुकुल आनंद के निर्देशन में बनी इस फिल्म में धर्मेन्द्र और सनी देवोल ने मुख्य भूमिका निभाई थी. फिल्म में जूही चावला के नायक की भूमिका शशि कपूर के पुत्र करण कपूर ने निभाई थी. फिल्म टिकट खिड़की पर असफल साबित हुई और जूही चावला दर्शकों के बीच अपनी पहचान बनाने में असफल रही.फिल्म 'सल्तनत' की असफलता के बाद जूही चावला को हिंदी फिल्मों में काम मिलना बंद हो गया.

इस बीच उन्होंने रोशन तनेजा के अभिनय प्रशिक्षण स्कूल में तीन महीने का प्रशिक्षण प्राप्त किया और दक्षिण फिल्मों की ओर अपना रुख किया. वर्ष 1987 में प्रदर्शित कन्नड़ फिल्म 'प्रेमालोक' उनके करियर की पहली हिट फिल्म साबित हुई.

लगभग चार वर्ष तक मायानगरी मुंबई में संघर्ष करने के बाद 1988 में नासिर हुसैन के बैनर तले बनी फिल्म 'कयामत से कयामत तक' की सफलता के बाद बतौर फिल्म अभिनेत्री इंडस्ट्री में अपनी पहचान बनाने में सफल हो गई.वर्ष 1990 उनके सिने करियर के लिए अहम वर्ष साबित हुआ. इस वर्ष उनकी 'स्वर्ग' और 'प्रतिबंध' जैसी सुपरहिट फिल्में प्रदर्शित हुईं. राजनीति से प्रेरित फिल्म 'प्रतिबंध' में जूही चावला अपने दमदार अभिनय के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के फिल्म फेयर पुरस्कार से नामांकित भी की गईं.

फिल्म 'बोल राधा बोल' में जूही चावला ने गांव की एक अल्हड़ युवती का किरदार निभाया जिसके लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के फिल्म फेयर पुरस्कार से नामांकित किया गया. वर्ष 1993 में उनको महेश भट्ट के निर्देशन में बनी फिल्म 'हम हैं राही प्यार के' में काम करने का अवसर मिला.

धर्मेंद्र की तबीयत को लेकर सनी ने किया रिएक्ट

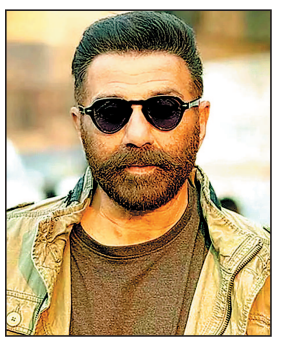

बॉलीवुड के सबसे सम्मानित परिवारों में से एक, देओल परिवार, इन दिनों धर्मेंद्र की सेहत को लेकर फैल रही अफवाहों से बेहद परेशान है. सोशल मीडिया पर लगातार झूठी खबरें चल रही हैं कि दिग्गज अभिनेता की हालत नाजुक है. इस पर अब उनके बेटे और सिनेमा के एक्शन स्टार सनी देओल का गुस्सा फूट पड़ा है. उन्होंने साफ कहा कि उनके पिता की तबीयत को लेकर फैलाई जा रही झूठी खबरें बेहद अफसोसजनक हैं.

परिवार ने भी बयान जारी कर कहा है कि धर्मेंद्र अब घर पर हैं और धीरे-धीरे स्वस्थ हो रहे हैं. इस बीच, बॉबी देओल और सनी को अस्पताल के बाहर कैमरों से बचते देखा गया था. पूरा परिवार फिलहाल धर्मेंद्र की देखभाल में व्यस्त है और सभी से निजता की अपील कर रहा है. धर्मेंद्र को हाल ही में मुंबई के एक निजी अस्पताल से डिस्चार्ज किया गया था. परिवार के अनुसार अब उनका इलाज घर पर ही जारी रहेगा और उनकी सेहत में सुधार हो रहा है. मगर सोशल मीडिया पर फैली गलत खबरों ने देओल परिवार को बेचैन कर दिया.

सनी देओल का वायरल वीडियो इस नाराज़गी की झलक है. वीडियो में वे मीडिया को स्पष्ट संदेश देते नजर आते हैं कि 'प्लीज़ ऐसी अफवाहें न फैलाएं, पापा बिल्कुल ठीक हैं.' बॉबी देओल ने भी इस दौरान कैमरों से दूरी बनाए रखी. धर्मेंद्र की तबीयत को लेकर आम लोगों में भी चिंता देखी जा रही है. बॉलीवुड के कई सितारे जिनमें अमिताभ बच्चन भी शामिल हैं उनसे मिलने पहुंचे.

'झमकुड़ी' की रोमांचक कहानी

बहुप्रतीक्षित ब्लॉकबस्टर 'झमकुड़ी' फिल्म शेमारू जोश पर अपने वर्ल्ड टेलीविजन प्रीमियर के साथ अब पूरे देश के दर्शकों को मंत्रमुग्ध करने आ रही है. 14 नवंबर, शाम 7 बजे प्रसारित होने वाला यह सिनेमाई अनुभव आपको रोमांचित कर देगा .

उमंग व्यास के निर्देशन में बनी 'झमकुड़ी' की कहानी आपको लेकर जाती है रहस्यमयी गाँव रानीवाड़ा में जो एक प्रतिशोधी चुड़ैल झमकुड़ी के श्राप से ग्रसित है. नवरात्रि के सकरात्मत्क माहौल में इसकी ताकत बढ़ती है और यह अपना कहर ढाती है. इसी बीच एंट्री होती है बाबलो और कुमुद की. एक ओर जहाँ एक अतरंगी और निडर रियल एस्टेट एजेंट है वहीं कुमुद एक शाही खानदान की वारिस हैं. ऐसे में दोनों अनजाने गाँव के रहस्यमय अतीत में उलझ जाते हैं और यहीं से कॉमेडी, सस्पेंस और अलौकिक रोमांच का तूफानी सफर शुरू होता है.

फिल्म में राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता अभिनेत्री मानसी पारेख ने एक बार फिर अपने शानदार अभिनय से दर्शकों का दिल जीत लिया है, वहीं लोकप्रिय डिजिटल क्रिएटर और अभिनेता विराज घेलानी अपने मजेदार अंदाज से हंसी के ठहाके लगाने पर मजबूर करते हैं. इनके साथ ओजस रावल, संजय गोराडिया, जयेश मोरे, क्रुनाल पंडित, चेतन दैया, भावना जानी और अन्य कलाकारों ने फिल्म में जान डाल दी है.

इंडस्ट्री ने मेरे पति को नजरअंदाज किया : फराह खान

फिल्म इंडस्ट्री की जानी-मानी कोरियोग्राफर, निर्देशक और निर्माता फराह खान हमेशा अपनी बेबाक राय के लिए जानी जाती हैं. हाल ही में फराह अपनी करीबी दोस्त और टेनिस स्टार सानिया मिर्जा के पॉडकास्ट शो 'सर्विंग इट अप विद सानिया' में शामिल हुईं, जहाँ उन्होंने अपनी पर्सनल और प्रोफेशनल लाइफ से जुड़े कई दिलचस्प खुलासे किए.

फराह ने पहली बार खुलकर बताया कि उनके पति शिरीष कुंदर को अक्सर इंडस्ट्री ने नजरअंदाज किया, क्योंकि लोग सिर्फ उनकी

सफलता देखते थे. उन्होंने कहा, 'लोग सिर्फ मुझसे बात करते थे, मेरे पति से नहीं. यह मुझे भी अच्छा नहीं लगता था.'

फराह ने यह भी माना कि उनकी सच्चाई बोलने की आदत ने कई बार उन्हें दोस्तों से दूर कर दिया है. लेकिन इसके बावजूद, वे अपनी राय ईमानदारी से रखना नहीं छोड़ेंगी. फराह खान ने पॉडकास्ट में कहा, 'कभी-कभी मैं अपने दोस्तों को नाराज़ कर देती हूँ, क्योंकि मैं बहुत ईमानदारी से बात करती हूँ. अब उम्र के साथ समझ में आता है कि हर बार सच बोलना ज़रूरी नहीं होता. खासकर फिल्म इंडस्ट्री में, जहाँ लोग ज़्यादा सेंसिटिव हैं.

क्योंकि सास भी कभी बहू थी 2' की फीकी पड़ी चमक!

टीवी का सबसे चर्चित सीरियल 'क्योंकि सास भी कभी बहू थी 2' शुरुआत में दर्शकों के बीच पुरानी यादें ताज़ा करने में सफल रहा था. स्मृति ईरानी के 'तुलसी' किरदार की वापसी और भव्य परिवारिक ड्रामा ने फैंस को एक बार फिर 2000 के दशक के मशहूर दौर में पहुंचा दिया था. लेकिन अब जैसे-जैसे एपिसोड बढ़ रहे हैं, दर्शकों का उत्साह कम होता दिखाई दे रहा है. शो की कहानी में ना तो कोई नया ट्विस्ट है और ना ही वो नयापन जो आज के दर्शक चाहते हैं. सोशल मीडिया पर लोगों ने लिखा कि मेकर्स ने वही पुराना फॉर्मूला दोहराया है 'सास, बहू और तीसरा इंसान.' अंगद-मिताली की लव स्टोरी हो या तुलसी-मिहिर के रिश्ते में तीसरी औरत की एंट्री, हर ट्रैक पहले से देखा-सुना लगता है. भूत वाला एंगल जोड़ने की कोशिश भी दर्शकों को रास नहीं आई. शुरुआत में जब 'क्योंकि सास भी कभी बहू थी 2' ऑन एयर हुआ, तो दर्शकों को लगा कि यह शो नई सोच के साथ रिश्तों के बदलते पहलुओं को दिखाएगा. परी, ऋतिक और अंगद की नई जनरेशन स्टोरी ने थोड़ी उम्मीद जगाई थी. लेकिन अब 100 से अधिक एपिसोड के बाद शो वही पुरानी राह पकड़ चुका है. अंगद और मिताली की लव स्टोरी को लेकर दर्शकों ने कहा कि ये आज की पीढ़ी नहीं, बल्कि 2000 के दौर की कहानी लगती है. कई एपिसोड बीत गए पर दोनों के रिश्ते में कोई प्रगति नहीं दिखी. वहीं 'भूत वाला ट्रैक' शो की सबसे बड़ी गलती साबित हुआ. अंगद की मंगेतर पर बंटू नाम के भूत का साया दिखाकर जो सस्पेंस बनाने की कोशिश की गई थी, उसे फैंस ने 'सस्ती स्क्रिप्ट' करार दिया.

सक्सेना सिर्फ किरदार नहीं, मेरी पहचान है : सानंद वर्मा

एण्डटीवी के शो 'भाबीजी घर पर हैं!' की कल्पना डॉ. अनोखेलाल सक्सेना के बिना करना मुश्किल है. पिछले एक दशक से, अभिनेता सानंद वर्मा ने इस मज़ेदार और अजीब किरदार को पर्दे पर जीवंत किया है, जिससे वह टीवी के सबसे यादगार पात्रों में शामिल हो गए हैं. यह शो अब अपने 11 साल का सफर पूरा कर चुका है और इस अवसर पर सानंद वर्मा ने अपने इस अद्भुत सफर के बारे में बात करते हुये इसे हंसी, सीख और दर्शकों के प्यार से भरपूर बताया इस मील के पत्थर पर अपने अनुभव साझा करते हुए, सानंद वर्मा कहते हैं, 'लगभग 3000 एपिसोड के बाद, सक्सेना जी मेरे शरीर और दिमाग का हिस्सा बन गए हैं. अब मुझे अपने हाव-भाव या प्रतिक्रियाओं के बारे में सोचना भी नहीं पड़ता, सब स्वाभाविक रूप से आ जाता है! हमारे शो की असली ताजगी हमारे शानदार लेखकों से आती है, जो लगातार नए किस्से और पंचलाइन लेकर आते हैं, जिससे हास्य हमेशा ताजा और जीवंत रहता है. जैसे ही दर्शकों ने हमारे किरदारों से जुड़ाव महसूस किया, सब कुछ सहज रूप से आगे बढ़ने लगा.' कॉमेडी और म्यूजिक के बीच दिलचस्प तुलना करते हुए वह कहते हैं, 'कॉमेडी संगीत जैसी होती है. सही समय और ताल ही सब कुछ है! जैसे एक संगीतकार नोट्स का अभ्यास करता है, हम भी पंचलाइन का अभ्यास करते हैं ताकि उसका सही रिदम मिल सके. कभी-कभी केवल आवाज़ का स्वर या टोन बदलना पूरे मज़ाक का रंग बदल देता है. हर अभिनेता की अपनी ताल होती है, अपना सुर होता है, और मैं उसी के साथ तालमेल बनाए रखता हूँ. यह किसी एक अभिनेता का काम नहीं है - यह टीमवर्क है. लेखन, टाइमिंग और सह-अभिनेता की केमिस्ट्री ही बेहतरीन कॉमेडी के स्तंभ हैं. जब ये तीनों पूरी तरह मेल खाते हैं, तभी जादू पैदा होता है.' एक मज़ेदार खुलासा करते हुए सानंद वर्मा ने हँसते हुए कहा, 'मेरे डायरेक्टर हमेशा कहते हैं कि मैं असल ज़िंदगी में भी सक्सेना ही हूँ! हम कॉरपोरेट के दिनों से एक-दूसरे को जानते हैं, और उन्हें लगा कि मैं पर्द के बाहर भी उतना ही अजीब हूँ. शायद इसलिए ही यह किरदार मुझे मिल गया!

'दिल्ली क्राइम 3' में पुलिस अफसर बनीं रसिका दुग्गल

नेटफ्लिक्स की मशहूर वेब सीरीज 'दिल्ली क्राइम 3' आखिरकार गुरुवार को स्ट्रीम हो गई है, और इसके साथ ही एक बार फिर रसिका दुग्गल ने दर्शकों को अपने सशक्त अभिनय से प्रभावित कर दिया है. इस सीजन में रसिका एक पुलिस अफसर नीतू सिंह के किरदार में नजर आ रही हैं, जबकि हुमा कुरैशी इस बार निगेटिव रोल में दिखाई दे रही हैं. 'दिल्ली क्राइम' के पहले दो सीजन जहां दर्शकों की उम्मीदों पर खरे उतरे थे, वहीं तीसरा सीजन भी अपनी रियलिस्टिक कहानी और इमोशनल टोन के कारण चर्चा में है.

हाल ही में रसिका ने इस सीरीज में काम करने का अपना अनुभव साझा किया. उन्होंने बताया कि इस बार शूटिंग के दौरान उन्होंने तकनीकी टीम से बहुत कुछ सीखा खासकर फोकस, कैमरा एंगल और टीमवर्क को लेकर. उन्होंने कहा, 'सेट पर हर सीन को परफेक्ट बनाने के लिए सिर्फ एक्टिंग नहीं, बल्कि पूरी यूनिट का समर्पण जरूरी होता है.'

रसिका दुग्गल ने बताया कि 'दिल्ली क्राइम 3' के सेट पर काम करते हुए उन्होंने फोकस और तकनीकी समझ के बीच संतुलन बनाने की कला सीखी. एक्ट्रेस ने कहा कि 'कई बार परफेक्ट सीन देने के लिए सिर्फ इमोशन नहीं, बल्कि कैमरे की बारीकी को समझना भी ज़रूरी होता है.

ट्विंकल खन्ना ने अपनी नई किताब का किया ऐलान

बॉलीवुड अभिनेत्री ट्विंकल खन्ना ने अपनी मशहूर किताब 'मिसेज फनीबोन्स' के सीक्वल का ऐलान किया है. ट्विंकल खन्ना कई रोल निभाती हैं वो एक कॉलमनिस्ट हैं, लेखिका हैं, ऑथर हैं, होस्ट हैं, और सबसे बढ़कर 'मिसेज फनीबोन्स' हैं!

ट्विंकल ने अपनी मशहूर किताब 'मिसेज फनीबोन्स' के सीक्वल 'मिसेज फनीबोन्स रिटर्न्स'की घोषणा की है.उन्होंने अपने सोशल मीडिया पर किताब की एक तस्वीर शेयर करते हुए लिखा 'हर बुक टूर में मुझसे यही पूछा गया कि 'मिसेज फनीबोन्स का सीक्वल कब आएगा.तो लीजिए, आखिरकार आ गया! दस साल, औरतों की ज़िंदगी, राजनीति, गॉडमैन, न्यूज़, खोना, ग़म, उम्र और हँसी पर लिखते हुए बीत गए.एक दशक जिसमें मैंने देखा कि भारत औरतों को कैसे देखता है , और मैं भारत को कैसे देखती हूँ.'मिसेज फनीबोन्स रिटर्न्स वो अब उम्र में बड़ी है, दिमाग़ में चौड़ी है, पर क्या वो और समझदार हुई है?' इस नई किताब में ट्विंकल खन्ना और ज़्यादा नुकीली नज़र, हाज़िरजवाबी और व्यंग्य लेकर लौट रही हैं.उनके फैंस पिछले दस सालों से इस सीक्वल का इंतज़ार कर रहे थे, और अब उनके पास एक और 'बेस्टसेलर' जोड़ने का मौका है. ट्विंकल की पहली किताब 'मिसेज फनीबोन्स : सी इज जस्ट लाइक यू एंड ए लॉ लाइक मी (2015) उनकी अख़बार की कॉलम्स पर आधारित थी, जो अपनी ईमानदार और मज़ेदार बातों के लिए बहुत पसंद की गई थी.